International Journal of Research
*Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers*
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

# स्वतन्त्रता आन्दोलन : हरियाणा की भूमिका का अध्ययन

**Dr. Neelam**
Asst. Prof. (Guest Faculty)
L.N. Hindu College, Rohtak (HR.)

हरियाणा सोनीपत से हाँसी तथा गुड़गाँव, दिल्ली से जगाधरी तक था। 600 ई0 पूर्व से 1000 ई0 तक हरियाणा में बुद्ध धर्म प्रधान रहा। गुड़गाँव का अहखां गाँव 500 साल तक बुद्ध धर्म का केन्द्र रहा। इसी प्रकार रोहतक दिल्ली मार्ग पर एक विशाल बुद्ध विहार था। हरियाणा की जनसंख्या बहुत कम थी तथा यहाँ के लोग शाकाहारी थे। बौद्ध काल के बाद हर्ष काल, मुस्लिम काल, मुगल काल और अंग्रेजी काल के दौरान हरियाणा को कई आक्रमणों तथा राजाओं के अहंकार का शिकार होना पड़ा।

जब मुगलों से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सत्ता हथियाई और उसका साथ देने वाले अधिकारियों को जागीरदार बना दिया गया। अनेक छोटे–2 राज्य हरियाणा क्षेत्र में स्थापित हुए; जैसे – दुजाना, झज्जर, बहादुरगढ़, फरूखनगर, बल्लभगढ़, लौहारू व फिरोजपुर झिरका आदि। इसका कुछ भाग पटियाला, नाभा व जीन्द के राजाओं को दिया गया। झज्जर तथा दुजाना की रियासतें बहुत बड़ी थी। पहली नारनौल तक तथा दूसरी हाँसी तक फैली हुई थी।

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद 1848 में अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार कर लिया। पंजाब का हरियाणा क्षेत्र से कोई लगाव नहीं था। रणजीत सिंह के बाद उनके करीबी श्याम सिंह अटारीवाल ने लाहौर को अंग्रेजों से वापिस लेने की कोशिश की परन्तु नाकामयाब रहे।

सर्वप्रथम 1768 के आस–पास एक अंग्रेज सैनिक अधिकारी जार्ज टॉमस ने हाँसी और झज्जर के बीच अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया, बाद में उसने पानीपत, करनाल और गोकलगढ़ पर भी आक्रमण किए, परन्तु 1768 के बाद यहाँ मराठाओं का अधिकार हो गया। लेकिन इसी बीच जार्ज टॉमस ने गुड़गांव को लूट लिया और हाँसी में अपना केन्द्र बना कर किला बनाया। बाद में उसने फतेहाबाद को भी जीत लिया।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

18वीं शताब्दी में दिल्ली के बाद पंजाब पर हमला करके अंग्रेजों ने हरियाणा के सोनीपत, पानीपत, कैथल, सिरसा चार जिले कायम करके अपना आधिपत्य स्थापित किया। नारायणगढ़, नाहन, छछरौली, झज्जर, बहादुरगढ़, बल्लभगढ़ आदि रियासतों के नवाब व राजाओं से समझौता कर लिया और 1803 में पलवल, रिवाड़ी के दो परगने भरतपुर रियासत से छीन कर कुछ लोगों को ठेके पर दे दिए और लगभग पूरे हरियाणा पर कब्जा कर लिया।

लेकिन यहाँ के लोगों में अंग्रेजी राज के विरूद्ध क्रोध जारी रहा। 1839 में अंग्रेजों ने पंजाब के रणजीत सिंह को हराकर लाहौर पर कब्जा कर लिया। 1845 में उनके करीबी तथा 1852 में रणजीत के पुत्र शेर सिंह ने लाहौर पर हमला किया लेकिन असफल रहे।

हरियाणा क्षेत्र के लोगों में अंग्रेजी राज के खिलाफ गुस्सा जारी रहा और जब मेरठ, गवालियर, झांसी तथा देहली के आस–पास आजादी की आवाज उठी तो हरियाणा पर इसका अधिक असर हुआ और अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ने के लिए पूरा जोर लगा दिया, लेकिन पंजाब के कुछ राज्यों तथा हरियाणा के गद्दारों की मदद से अंग्रेजों ने विजय हासिल की और झज्जर, बहादुरगढ़, फरूखनगर, बल्लभगढ़ रियासतों को समाप्त कर दिया गया और इनके नवाबों को फांसी दे दी गई। जिन्होंने अंग्रेजों की मदद की उनकी रियासतें कायम रही। इस प्रकार सम्पूर्ण हरियाणा क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार बन गया। 1857 में नारनौल और महेन्द्रगढ़ की जनता द्वारा अंग्रेजों के विरूद्ध घोर संग्राम किया गया और नसीबपुर का क्षेत्र अंग्रेजों के रक्त से लाल हो गया था। यह क्षेत्र पटियाला के महाराजा को अंग्रेजों का साथ देने के लिए इनाम में दिया गया था।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई तो हरियाणा से लाला मुरलीधर इसके 72 प्रतिनिधियों में से एक थे। हरियाणा में 1916 में के0 ए0 देसाई तथा नेकीराम शर्मा ने मिल कर भिवानी मैं कांग्रेस की स्थापना की और गाँधी जी को बुलाया। इसके बाद रोहतक, हिसार, अम्बाला, करनाल, गुड़गाँव में कांग्रेस समिति स्थापित की गई। 1916 में बहादुरगढ़ के पास परनाला गाँव के नजदीक रेलवे लाईन उखाड़ दी गई तथा वहाँ के लाला काशीराम, इन्द्रसैन, ज्वाला प्रसाद व जगदीश राय गिरफ्तार किए गए। उनके खिलाफ रोहतक की विशेष अदालत में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

मुकदमा चलाया गया और एक साल जेल भेजे गए। उधर गोहाना में मोल्वी अब्दुल अजीज को विस्फोटक हथियार बनाने के आरोप में दो साल की सजा सुनाई गई।1917 के कलकत्ता अधिवेशन में श्याल लाल तथा नेकीराम शर्मा ने हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया। बाद में 1919 के अधिवेशन में पीरू सिंह मटीण्डू और देवी सिंह ने भी हिस्सा लिया।

1919 में रोलेट अधिनियम पास होने के बाद इसका सर्वप्रथम विरोध हरियाणा में हुआ जिसके लिए अम्बाला, हिसार, रोहतक में सभाएँ हुई और 13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग में जनरल डायर ने गोलियों से जनता की सामूहिक हत्या की।

1920 में जब गांधी जी ने हरियाणा का दौरा किया तो जनता ने उन्हें पैसे तथा आभूषण भेंट किए और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और बाद में 150 के लगभग व्यक्ति गिरफ्तार हुए। 6–8 नवम्बर 1920 रोहतक को रामलीला मैदान में जिला कांग्रेस अधिवेशन हुआ, जिसमें यहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने गांधी के असहयोग आंदोलन को समर्थन करने की घोषणा की और लाला मुरलीधर, मिर्जा नाजिर बेग, गणपत राय, गोकलचन्द, नैनसुख दास, बलदेव सिंह आदि ने अपने खिताब वापिस लौटा दिए।

बाबू श्यामलाल, दुलीचन्द, गुलाम बेग नौरंग, रामचन्द्र वैद्य, द्वारकादास, जुगल किशोर आदि अपनी वकालत छोड़ कर आन्दोलन में शामिल हो गए। जनवरी 1920 में जाट संस्कृत स्कूल के छात्रों द्वारा रोहतक में एक बड़ा जलूस निकाला गया। बलदेव सिंह और रिछपाल सिंह को गिरफ्तार किया गया और दो साल की सजा मिली।

जनवरी 1923 में श्रीराम शर्मा ने झज्जर से हरियाणा तिलक अखबार शुरू किया। विदेशी के समर्थन में हिसार में महिला वालियंटर कोर की स्थापना की गई। इसी दौरान झज्जर कांग्रेस समिति में टाऊनहाल पर तिरंगा फहरा दिया और बाल गंगाधर तिलक का चित्र लगाया गया। इस पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर लाठी चार्च किया जिसके विरोध में हरियाणा के कई नगरों में हड़ताल रही।

नगरपालिका रोहतक के कुछ अंग्रेज समर्थकों ने प्रिंस ऑफ वेल्स का स्वागत करने का प्रस्ताव रखा परन्तु जब जनता को पता चला तो इसके विरोध में एक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

सार्वजनिक सभा हुई और नगरपालिका से प्रार्थना की गई कि प्रिंस के आने का बहिष्कार किया जाए। इस पर प्रस्ताव पास नहीं हो सका और शहरवासियों के अंग्रेज समर्थक सदस्यों का बहिष्कार किया।

1923 में हिसार में हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई और लगभग 70 पाठशालाओं में हिन्दी में पढ़ाई होने लगी। 1928 में हरियाणा ने साईमन कमीशन का पूरजोर विरोध किया। 8 मार्च 1929 को रोहतक में बड़ा जलूस निकाला गया जिसके पश्चात् जवाहरलाल नेहरू ने पण्डाल में स्टेज के सामने तिरंगा फहराया।

झज्जर नगरपालिका कमेटी ने साइमन कमिशन का कड़ा विरोध किया। रोहतक में भी इसके विरोध के कारण कमीशन समर्थक प्रस्ताव पास नहीं कर सके। 1929 में पंजाब प्रदेश का 15वां राजनीतिक सम्मेलन 8–9 मार्च को रोहतक में हुआ, जिसमें जवाहर लाल नेहरू, लाला दुलीचन्द–अम्बाला, लाला श्यामलाल–रोहतक, श्रीराम शर्मा आदि ने हिस्सा लिया। इसमें मोतीलाल नेहरू, के0 सान्थानम, महीप्रसाद सिंह और केदार नाथ सहगल ने भाषण दिए। सम्मेलन समाप्त होने के पश्चात् नौजवान कीर्ति किसान सभा के सदस्यों ने स्टेज पर कब्जा कर लिया और अपनी सभा शुरू कर दी जिसमें मांगेराम वत्स, लछमन दास, दौलत राम गुप्ता ने भाषण दिए और किसान मजदूरों के कल्याण के लिए कई प्रस्ताव पास किए।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन 29–30 दिसम्बर, 1929 को लाहौर में हुआ, जिसमें भारत को स्वतन्त्र करने की घोषणा की गई। इस अधिवेशन में रोहतक से श्रीराम शर्मा, श्योचन्द–बाघपुर, रामफूल सिंह, श्यामलाल वकील, झज्जर से राव मंगलीराम, सोनीपत से मानसिंह, जुगलाल कासनी, कलानौर से चाँद खाँ, मोखरा से सलवन्त सिंह, चिमनी से छाजुराम, नूरनखेड़ा से चन्दगीराम आदि शामिल हुए।

1927 से 1931 तक रोहतक आंदोलनकारियों का केन्द्र रहा। लेखराम वैद्य ने लक्षमण दास के सहयोग से बम बनाने का कारखाना यहाँ स्थापित किया। कांग्रेस अधिवेशन लाहौर, 1929 में हरियाणा से श्रीराम शर्मा, श्योचन्द बाघपुर, रामफूल सिंह, श्यामलाल वकील, राव मंगलीराम, मानसिंह, जुगलाल, सलवन्त सिंह घासीराम आदि ने हिस्सा लिया और सम्पूर्ण आजादी के प्रस्ताव का समर्थन किया।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

26 जनवरी 1930 को हरियाणा में पहला स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। नमक सत्याग्रह में बढ़चढ़ कर भाग लेने वाले श्रीराम शर्मा, रामशरण दास को जहादपुर गाँव के 40 कुओं के खारे पानी से नमक बनाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। विदेशी कपड़ों को जलाने के लिए रोहतक जिले से 400 गिरफ्तारियाँ दी गई।

इसी प्रकार भिवानी में भी हजारों कार्यकर्त्ताओं ने नमक बनाने में हिस्सा लिया। अम्बाला, यमुनानगर, जगाधरी, कुरूक्षेत्र, नारायणगढ़ में लोगों ने गिरफ्तारियाँ दी। गुड़गांव और करनाल में भी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। इस आंदोलन में लाला काशीराम–सोनीपत, लछमन दास, मोहन स्वामी–झज्जर, हरिसिंह नैन, राव मंगलीराम–खातीवास, रामफूल सिंह, श्रीराम शर्मा आदि को एक–डेढ़ साल की कैद तथा जुर्माना किया गया। इसके अतिरिक्त लगभग 60 अन्य कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। लेकिन नमक सत्याग्रह में हरियाणा के विभिन्न स्थानों से जत्थों का आना जाना जारी रहा।

जिला अम्बाला के लाला दुलीचन्द, सूरजभान, कमला देवी ने गाँव–गाँव जाकर आन्दोलन के लिए सत्याग्रही भर्ती किए और शहरों में विदेशी कपड़ों को जलाने तथा शराब की दुकानों को उठवाने के लिए गिरफ्तारियाँ दी। यमुनानगर, जगाधरी, कुरुक्षेत्र, रोपड़, नारायणगढ़, में जलूस निकाले गए। गुड़गांव तथा करनाल में भी शराब की दुकानों को उठवाया तथा पुलिस से लाठियाँ खाई। 15 अप्रैल 1930 को रोहतक से कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का एक जत्था धरासना–गुजरात के लिए रवाना हुआ जिसमें नत्थूराम–मोखरा, गुगन सिंह–मातनहेल, तूहीराम–कटवाल, बनवारी लाल–सांघी, कुरड़ाराम–गंगाना, देशराम–लडायन, स्वरूप सिंह–सांघी आदि शामिल थे। यह जत्था तीन दिन अजमेर में रुकने के बाद साबरमती पहुंचा और वहाँ से छोटे–2 टुकड़ों में बंट कर धरासना पहुँचा। यहाँ नमक बना कर सरकारी कानून तोड़ा। 6 मार्च, 1931 को सरदार खान ने जगाधरी में विदेशी सामान की दुकानों को चेतावनी दी कि वे या तो इन्हें बन्द कर दें या इनके सामान को जला दिया जाएगा। बाद में 6 अप्रैल 1931 में यहाँ के कांग्रेस कार्यकर्ता बिलासपुर गए और विदेशी सामान की बिक्री बन्द करवाई। कुछ व्यापारियों को कांग्रेस आदेश मानने के खिलाफ जुर्माना किया गया।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

भिवानी में भी आन्दोलन चला, जहाँ पर नौजवान भारत सभा को गैर कानूनी संस्था करारे दे कर इसके कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया जिनमें श्याम लाल, भगवान दास, अमीलाल, रामनाथ त्रिपाठी, लाला मनोहरलाल आदि शामिल थे। सिरसा में नेकीराम तोता, गणपतराय, कुन्दनलाल, तेजभान आदि को गिरफ्तार किया गया। रोहतक में अक्तूबर 1931 को एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्रीराम शर्मा द्वारा सरदार पटेल का स्वागत किया गया। बाद में पटेल हिसार, भिवानी, सिरसा व महम की सभाओं में भी बोले।

मार्च 1932 में झज्जर रोड पर कांग्रेस सेवा दल कैम्प पर पुलिस ने छापा मारा और कई कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार कर लिया बाद में उन्हें एक–दो वर्ष की सजा सुनाई गई। बेरी थाने में सेवादल के सदस्यों को पीटा गया जिसके विरोध में जलूस निकाला गया। राव कतलू राम खेड़ी खुमार ने अपनी नम्बरदारी छोड़ दी। जिला रोहतक के किसानों ने चांदनी चौक के घण्टाघर (देहली) पर धरना दिया। दूसरी तरफ रोहतक में जिलाधीश की कोठी पर तिरंगा फहराया गया।

18 दिसम्बर 1938 में आसोदा में एक ग्रामीण कांग्रेस सम्मेलन किया गया। परन्तु पुलिस ने कुछ शरारती तत्वों के साथ मिलकर वहाँ गडे झण्डों को उखाड़ दिया और स्टेज का सारा सामान उठा लिया। जब बलदेव सिंह व श्रीराम शर्मा वहाँ पहुँचे तो वहाँ कुछ भी नहीं मिला। बाद में वे पुलिस कप्तान से मिले परन्तु कोई कारवाही नहीं हुई। लेकिन कार्यकर्ताओं ने दोबारा सम्मेलन बुलाने का फैंसला किया। परन्तु कामयाबी नहीं मिली। इसके बाद 19 फरवरी 1939 को तीसरी बाद सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें पुलिस ने लाठियाँ बरसाई और 50 व्यक्ति घायल हो गए जिन्हें बहादुरगढ़ अस्पताल में भर्ती कराया गया जिनमें मुख्यतयाः भरत सिंह, आनन्द स्वरूप वकील, मास्टर नान्हू राम, जुगलाल, दीपचन्द, मेहर सिंह दांगी, मंगलीराम आदि शामिल थे। 3 मार्च 1939 को आसोदा में कांग्रेस का सम्मेलन हुआ जिसे सरोजनी नायडू ने सम्बोधित किया और 20000 व्यक्तियों ने हिस्सा लिया।

इसी बीच 26 मार्च 1938 को मदीना में कांग्रेस सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता सरदार किशन सिह, भगतसिंह के पिता ने की। राष्ट्रीय नेताओं के अतिरिक्त हरियाणा के कार्यकर्त्ताओं के खिलाफ मुकदमें दर्ज किए और उन्हें

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

सालभर के लिए नजरबन्द किया गया। 24–25 फरवरी 1940 में जसोर खेड़ी में जिला कांग्रेस का सम्मेलन हुआ जिसमें 25000 लोग हाजिर थे। सरदार किशन सिंह ने इसका उद्घाटन किया तथा शेर ए जंग करतार सिंह, श्रीराम शर्मा, भरत सिंह, मूलचन्द जैन, आनन्द स्वरूप, मंगलीराम ने भाषण दिए। इसके बाद गांव में पुलिस चौकी स्थापित कर दी गई।

भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान भालोठ के हरीराम ने अपना सारा सामान बेच घर को ताला लगा दिया और सारा परिवार गिरफ्तार हो गया तथा जेल में गए। इसी समय पाटौदी में बेगार के खिलाफ आन्दोलन चलाया गया जिसमें रामसिंह, नन्द किशोर तथा छोटे लाल गिरफ्तार किए गए। पलवल में भी सत्याग्रह कैम्प लगाया गया जिसका अनुशरण करनाल ने भी किया और नगर–पालिका की इमारत पर तिरंगा लहराया। करनाल तथा पानीपत से मानसिंह, ईश्वर चन्द्र, हरनाम सिंह, नाथीराम, चन्द्रकीर्ति आदि को गिरफ्तार किया गया। कैथल, शाहाबाद, अम्बाला में भी जलूस निकाले गए और सैंकड़ों लोग गिरफ्तार हुए।

व्यक्तिगत सत्याग्रह में रोहतक से 266 व्यक्ति जेल गए। इसी प्रकार हिसार, सिरसा, गुड़गांव रेवाड़ी से बलवन्त राय तायल, जुगल किशोर, कृपाराम, मुरली मनोहर, साहबराम, शिवनारायण आदि गिरफ्तार हुए। गांव भापड़ौदा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गुप्त सभा हुई जिसमें भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार गुप्त रूप से घर–2 जाकर करने का निर्णय लिया गया ताकि गिरफ्तारी से बचा जा सके। परन्तु सांपला पुलिस ने नेतराम के घर को घेर लिया जहाँ मीटिंग चल रही थी और रणवीर सिंह, नान्हूराम, श्योकरण, बदलूराम को थाने में बन्द कर दिया और 15 कार्यकर्ताओं को बहादुरगढ़ थाने में हवालात में डाल दिया।

नारनौल में क्रांतिकारी युवकों ने एक गुप्त संस्था–रीऐक्शनरी आर्गेनाइजेशन की स्थापना की जो बम बनाने का काम करती थी जिससे रेल पटरी तथा सरकारी दफ्तरों में विस्फोट किए जाते थे। इसका संचालन रामकिशोर, अयोध्या प्रसाद, भागीरथी प्रसाद, हरिकृष्ण तथा मुंशीलाल ने किया जिन्हें बाद में गिरफ्तार कर लिया गया और कई वर्षों की सजा हुई। परन्तु हाईकोर्ट ने उन्हें बरी कर दिया था।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हरियाणा से राष्ट्रीय हिन्द फौज में कैप्टन महताब सिंह, मनीराम सहरावत, मेजर बलवन्त सिंह, कैप्टन भगवान सिंह, मेजर जुगलाल, कैप्टन भरत सिंह, कैप्टन चन्दन सिंह, दीपचन्द, प्रीत सिंह, बनवारी लाल, अमीरसिंह, कवल सिंह, लेफ्टीनेंट सेवा सिंह, छोटूराम, कर्मसिंह, मेहचन्द कवल सिंह, रामसिंह आदि शामिल थे। इस प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वालों में लाला मुरलीधर–अम्बाला, नेकीराम शर्मा–रोहतक, बाबू श्यालाल–सांपला, मास्टर बलदेव सिंह–रोहतक, श्रीराम शर्मा–झज्जर, राव मंगली राम वैद्य–झज्जर, गोपीचन्द भार्गव–सिरसा, साहबराम, सिरसा, रणवीरसिंह–रोहतक, लाला हरदेव सहाय– हिसार, रामसिंह जाखड़–झज्जर, कैप्टन मुरली मनोहर–सिरसा, ईश्वरचन्द गुप्ता–करनाल, आर0 कृष्णा–करनाल, माधेराम–पानीपत, लछमन दास–रोहतक, स्वामी आत्मानन्द–रोहतक, लेखराम वैद्य–फतेहाबाद, जुगलकिशोर वकील–हिसार, हरलाल साहु–भट्टूकला, कामरेड मांगेराम वत्स–रोहतक, बाबू दयाल शर्मा–रेवाड़ी, बलवन्त राय तायल–रोहतक, मुलतान सिंह गुप्ता–रोहतक, नेतराम–हिसार, मामचन्द–गोहाना, मास्टर रामनारायण–रोहतक गणेशीलाल–हिसार, रूपलाल मेहता–गुड़गांव, अमीलाल–जींद, मानसिंह–सोनीपत, कृपाराम – हिसार, देवराज सेठी–रोहतक, दौलतराम गुप्ता–रोहतक, बनारसी गुप्ता–जींद, हीरा सिंह–जींद, देवीलाल वैद्य–जींद, हरिहर लाल भार्गव–गुड़गांव, मास्टर नान्हूराम–रोहतक, लाला काशीराम–सोनीपत, पतराम बेरी, दलसिंह–जींद, छाजूराम–झज्जर आदि शामिल थे।

आजादी की पहली जंग 1857 की पहली जंग 10 मई को मेरठ से शुरू हुई थी। विद्रोह की आग धीरे–धीरे पूरे देश में फैल गई। रोहतक में विद्रोह की चिंगारी दस दिन बाद पहुंची थी। जब मुगल बादशाह ने 24 मई 1857 को तफजल हुसैन के नेतृत्व में रोहतक की जनता ने अंग्रेजों को यहाँ से भगाने में अहम योगदान दिया। इसलिए रोहतक का नाम भी 1857 के विद्रोह में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाता है।

इतिहासकारों के मुताबिक 1857 में रोहतक पर अंग्रेजी शासन का कब्जा था। उस समय रोहतक में जीडी लाक नामक अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर थे और बख्तावर सिंह तहसीलदार होते थे। जब मुगल बादशाह ने 24 मई 1857 को तफजल हुसैन को रोहतक को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के लिए भेजा तो इन दोनों

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अधिकारियों ने अंग्रेजों की बागी सेना का मुकाबला करने की कोशिश की। लेकिन जनता का आक्रोश भड़क चुका था, जिसके कारण जीडी लाक और बख्तावर सिंह अन्य अफसरों के साथ रोहतक छोड़कर पानीपत की तरफ भाग निकले थे। अंग्रेजी सेना के बागी सेनानियों ने कचहरी और सरकारी दफ्तरों को आग लगा दी। अंग्रेज अफसरों के घर फूंक दिए। सरकारी कागज जला दिए। स्वतन्त्रता संग्राम में किसान, मजदूर, दस्तकार सहित अन्य सामान्य लोग भी कूद पड़े थे। व्यवसायी और महाजनों ने साथ नहीं दिया तो जनता के विरोध का सामना करना पड़ा।

जनता ने जेल पर हमला कर कैदियों को आजाद करा दिया। जिले के बाद कस्बों में बगावत फैल गई थी। यह बगावत आम जनता की बगावत बन चुकी थी। जिले से अंग्रेजी राज खत्म हो चुका था। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ॰ सूरजभान ने हरियाणा और आजादी की पहली जंग पुस्तक में भी इसका जिक्र किया है।

महम मदिना पर भी किया था कब्जा

रोहतक को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के बाद तफजल हुसैन की सेना अब दिल्ली वापस जाने लगी। दिल्ली जाते वक्त सांपला में सेना ने भारी तादाद में अंग्रेजों को मार गिराया। मांडोठी गाँव में सेना ने कस्टम बंगले जला डाले। उधर, महम, मदीना पर भी बागियों ने कब्जा कर लिया था।

जीडी लाक को दोबारा रोहतक भेजा

कंपनी सरकार ने जीडी लाक को दोबारा रोहतक जाकर विद्रोह को दबाने के लिए आदेश दिया। 24 मई को 60वीं भारतीय रेजीमेंट भी रोहतक के लिए रवाना कर दी गई। दस जून को इन सिपाहियों ने बगावत कर दी। अंग्रेजी सेना को बागियों के भारी हमले के कारण पीछे हटना पड़ा और बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। जून और जुलाई के दौरान अंग्रेज कुछ नहीं कर पाए। इससे अंग्रेजों के हौंसले पस्त हो गए थे।

करीब 156 वर्ष पूर्व झज्जर में नवाबी राज चाहे बेसक समाप्त हो गया हो, लेकिन 23 दिसंबर 1857 का दिन नवाब अब्दुर्रहमान खान की शहादत से इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया। आज भी उन्हें बड़े फर्क के साथ याद किया जाता है। अंतिम नवाब अब्दुर्रहमान खां द्वारा शूरवीरता, राष्ट्र भक्ति का परिचय देते हुए देश

को अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ियों से छुटकारा दिलाने के लिए अंतिम सांस तक अथक प्रयास किया गया।

इतिहासकार बताते हैं कि 1857 की क्रांति के महान योद्धा व झज्जर के अंतिम नवाब अब्दुर्रहमान खान को क्रांतिकारियों का साथ देने से जुड़े तीन आरोपों को लेकर अंग्रेजों की सरकार ने दिल्ली के लालकिले के सामने चांदनी चौक पर फांसी दे दी थी। आजादी से पूर्व अंग्रेजी सरकार द्वारा नवाब खाँ पर अंग्रेजी शासन की खिलाफत करने, आन्दोलनकारियों को धन मुहैया करवाने तथा गोरी सरकार को धोखा देकर क्रांतिकारियों के साथ पत्र व्यवहार करने सरीखे आरोप लागए गए थे और उन पर लगे आरोपों के आधार अंग्रेजी प्रशासन की तरफ से उनके केस की सुनवाई रायल हाल दिल्ली में अंग्रेजी अदालत में 17 दिसंबर 1857 को हुई थी। मात्र तीन दिन चले मुकदमें में झज्जर के नवाब अब्दुर्रहमान खां को फांसी की सजा सुनाई गई।

1857 में मेरठ से फूटी सैनिक विद्रोह की चिंगारी हरियाणा के कई हिस्सों में बड़ी तेजी से आग में बदल गई थी। आंदोलन की तपिश न केवल सैनिकों, बल्कि आवाम को भी उद्वेलित कर गई। इसकी बानगी हांसी में भी दिखाई दी जब यहाँ के पिता–पुत्र की देद्दाभक्ति ब्रिटिश हुकूमत पर कहर बरपा गई। मंगल खाँ व उनके पुत्र कायदे खाँ की गौरवगाथा भारतीय अभिलेख में आज भी दर्ज है। वह 29 मई की ऐतिहासिक सुबह थी। करीब दस बजे थे। स्वाधीनता का उबाल सड़कों पर उतर आया था। पुट्ठी प्यादात गांव के मुखिया मंगल खां अपने पुत्र कायदे खां व समर्थकों के संग हांसी जा पहंचे। यहाँ इन्होंने 11 अंग्रेजों की हत्या कर दी। तत्पश्चात् जेल तोड़कर भारतीय कैदियों को रिहा कर दिया।

इस दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी का खजाना भी लूट लिया गया। कंपनी पर मंगल खाँ का कहर इतना अप्रत्याशित व खौफनाक था कि ब्रिटिश हुकूमत के अधिकारियों को हर पल अपने सिर मौत का तांडव होता दिखाई देने लगा। ब्रिटिश अफसरों में यह खौफ घर कर गया कि कहीं 8 अप्रैल को शहीद हुए बलिया के मंगल पांडे की आत्मा तो मंगल खाँ के शरीर में प्रवेश नहीं कर गई। एक बार तो अंग्रेजों ने घुटने टेक दिए थे मगर बाद में मंगल खां, उनके बेटे कायदे खां व अन्य पकड़े गए। अभिलेखागार विभाग के क्षेत्रीय सहायक निदेशक डॉ॰ राजेश श्रीवास्तव के

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अनुसार मंगल खां सहित कई लोगों पर रोडरोलर चला दिया गया। यह सच है कि मंगल पांडे की तरह ज्यादा चर्चित नहीं रहे मंगल खां। लेकिन अपने शौर्य से तत्कालीन शासन की चूलें हिला देने वाले पिता–पुत्र का बलिदान वंदनीय है।

उन दिनों पुट्ठी प्यादात गांव के ज्यादातर बाशिंदे ईस्ट इंडिया कंपनी या हांसी रियासत की फौज में थे। इसी गाँव का मंगल कहीं बिछड़ गया था। वह रोहनात के रांगड़ परिवार को मिल गया। इस परिवार ने वारिस नहीं होने के कारण मंगल के नाम के साथ खाँ जोड़ दिया और अपनी बेटी से उसकी शादी कर दी। तत्पश्चात् अपनी रियासत की बायीं दिशा में एक बस्ती बसाई जिसे पुट्ठी मंगल खां के नाम से जाना जाता है।

मंगल खां व उनके पुत्र कायदे खां सहित ग्रामीणों के तांडव को देख ब्रिटिश हुकूमत बौखला गई थी। अभिलेख बताता है कि अंग्रेजों ने पूरे गांव को तोप के निशाने पर लेकर ध्वस्त कर दिया। साथ ही पूरे गांव को नीलाम कर दिया।

जिले का इतिहास गवाह है कि 1857 के विद्रोह में थानेसर के जागीरदारों व मुखियाओं ने आंदोलनकारियों का साथ दिया होता तो यहाँ भी अंग्रेजों को मुह की खानी पड़ती। देसी फौजों को शांत देख नंबरदारों और चौधरियों ने यहाँ आंदोलन की जिम्मेदारी उठाई लेकिन अंग्रेज उनके आंदोलन को दबाने में कामयाब हो गए। अंग्रेजी शक्ति का मुकाबला करते हुए 135 बागी शहीद हो गए। 62 विद्रोहियों को लुटेरे कह कर मार डाला गया और कई फांसी चढ़ा दिए गए।

प्रथम अफगान युद्ध की पराजय के बाद अंग्रेजों ने प्रतिक्रिया स्वरूप तीव्र गति से एक के बाद एक रियासतों को हड़पना प्रारंभ कर दिया। 1843 में कैथल की रियासत हड़प ली गई। लाडवा के राजा अजीत सिंह ने यद्यपि पर्याप्त संघर्ष किया तथा प्रथम अंग्रेज सिख युद्ध में अंग्रेजों की सेना को सरस्वती के निकट काफी परेशान किया तथा सर हैनरी स्मिथ को जिसने चूरोप में वाटरलू की लड़ाई में भाग लिया था, काफी नुकसान पहुंचाया। 1845 में लाडवा की रियासत भी जब्त कर ली गई और अब बारी आई थानेसर की। चांद कौर ने 1844 से 50 तक राज्य किया, लेकिन उसकी 1850 में मृत्यु हो गई। अतः लार्ड डलहौजी ने उनका कोई उत्तराधिकारी न होने का लाभ उठाते हुए इसे अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। फतेह सिंह की दूसरी पत्नी रत्नकौर कुछ देर तक जीवित रहीं। शीघ्र ही थानेसर को एक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

जिला बना दिया गया जिसमें रादौर, थानेसर, कैथल, लाडवा आदि के भाग थे। इसमें तीन तहसीलें बनाई गई। जिनके नाम पिपली, थानेसर व कैथल रखे गए।

1857 की मेरठ से शुरु हुई क्रांति में थानेसर जिले में देसी सेना तो बगावत नहीं कर पाई परंतु नंबरदारों और चौधरियों ने कंपनी राज के खिलाफ विद्रोह की कमान संभाली। अनेक जगहों में अंग्रेजी सेना से मुठभेड़ होती रही। थानेसर में ही अंग्रेजी शक्ति का मुकाबला करते हुए 135 बागी शहीद हो गए। 62 विद्रोहियों को लुटेरे कह कर मार डाला गया। अनेक लोगों को बिना मुकदमा चलाए सरेआम फांसी पर लटका दिया गया।

1857 की क्रांति भले ही मेरठ से चली हो लेकिन इस आंदोलन में हरियाणा के क्रांतिकारियों ने एक कदम आगे बढ़कर योगदान दिया। यहाँ 3297 क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। अंग्रेजों ने आंदोलन को दबाने के लिए प्रदेश के 92 गांवों को जलाकर राख कर दिया था। हरियाणा सदियों से रणबांकुरों के लिए जाना जाता है। इसका उदाहरण केवल 1857 की क्रांति ही नहीं बल्कि ताजा उदाहरण 1999 में हुए कारगिल युद्ध तक भी देखने को मिला, जिसमें सबसे ज्यादा हरियाणा के नौजवान शहीद हुए। 1857 की क्रांति के पन्नों को पलटें तो केवल मेवात में 1019 क्रांतिकारी शहीद हुए, अंग्रेजों ने यहां के नौ गांवों को आग के हवाले कर पूरी तरह तबाह कर दिया। गुड़गांव जिले के 479 क्रांतिकारियों को अंग्रेजों ने मार दिया। फरीदाबाद में भी अंग्रेजों ने बड़ी तबाही मचाई। यहाँ के 180 क्रांतिकारियों को मार दिया गया वहीं 21 गांवों को आग के हवाले कर दिया गया। महेंन्द्रगढ़ में 485 व रेवाड़ी में 128 क्रांतिकारी शहीद हुए। झज्जर रियासत के नवाब अब्दुल को फांसी दे दी गई थी। रोहतक में 100 क्रांतिकारियों ने जहाँ शहादत दी वहीं दो गांवों को अंग्रजों ने आग के हवाले कर दिया। सोनीपत में 87 लोग शहीद हुए तथा कई गांवों को जला दिया गया।

भिवानी में 30, हिसार में 332, सिरसा में 203 व पानीपत में 179 लोग शहीद हुए तथा 22 गांवों को अंग्रेजों ने तबाह कर दिया। करनाल के 31, कुरूक्षेत्र के 62 व अंबाला के 200 क्रांतिकारी शहीद हो गए। शहीद हुए क्रांतिकारियों में 1110 की पहचान नहीं हो पाई थी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के धरोहर में विश्व संग्रहालय दिवस पर 1857 के शहीदों पर लगाई चित्र प्रदर्शनी में प्रदेश के क्रांतिकारियों का

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

चित्रण पेंटिंग के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। धरोहर के क्यूरेटर डॉ॰ महासिंह पूनिया ने कहा कि 1857 की क्रांति के शहीदों के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है।

सन्दर्भ :

1. हरियाणा तिलक, 7.2.1928, 20.11.28, 12.3.29, 8.4.1929,2.7.1929, 3. 2.1930, 25.2.1930, 18.4.1930,14.8.1932,9.12.1932,6.11.1934, 7.4. 1938, 21.12.1938, 7.11.1939, 7.3.1939,
2. श्रीराम शर्मा, क्रीसेन्ट इन इण्डिया, पृ. 283
3. रामसिंह जाखड़, स्वतन्त्रता संग्राम में हरियाणा का योगदान, दिल्ली : अर्चना, 1991